## परचम: सफल स्टार्टअप आइडिया की रेस में आगे बढ़ रहे हमारे युवा

# राजस्थान बन रहा नवाचारों का गढ़

राजस्थान के युवाओं के इनोवेटिव आइडिया स्टार्टअप्स की शक्ल में उड़ान भर रहे हैं। एक-दो नहीं बल्कि सैकड़ों स्टार्टअप्स न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी धाक जमा रहे हैं। इतना ही नहीं, ये स्टार्टअप्स आइटी सेक्टर के साथ-साथ चिकित्सा व शिक्षा जैसे पब्लिक सेक्टर्स में भी लोगों का जीवन आसान बना रहे हैं। यही कारण है कि कुछ वर्षों में ही प्रदेश स्टार्टअप्स आइडिया में दसवें से चौथे पायदान पर पहुंच गया है। जर्मनी, यूएस, ऑस्ट्रिया सरकार ने राजस्थान में स्टार्टअप्स पर काम कर रहे युवाओं को अपने यहां भेजने का न्योता दिया है।

रिपोर्ट: भवनेश गुप्ता, जया गुप्ता

## ■ उड़ान भर रहे युवाओं के आइडिया ■ प्रदेश में अब तक 2979 स्टार्टअप्स रजिस्टर्ड

### स्कूल स्टार्टअप्स से मिलेगा ग्रामीण युवाओं को मौका

तेलंगाना के बाद...

**राजस्थान दूसरा राज्य**

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. स्टार्टअप्स में अब शहरों के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों के युवाओं के आइडियाज को भी भरपूर मौका मिलेगा। सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को स्टार्टअप्स के लिए प्रोत्साहित कर रही है। स्कूल स्टार्टअप शुरू करने वाला राजस्थान, तेलंगाना के बाद दूसरा राज्य है। अब जरूरत है ग्रामीण युवाओं को आगे आने की ताकि वे भी इस कड़ी से जुड़कर स्वरोजगार शुरू कर सकें। इसके लिए जयपुर, उदयपुर, भरतपुर, कोटा, बीकानेर और चूरू में टेक्नोहब और आइस्टार्ट सेंटर खोले गए हैं। इन सेंटर्स पर युवाओं को स्टार्टअप शुरू करने के लिए जगह, फंड व मेंटर सपोर्ट दिया जा रहा है। साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग ने अब एमएनआइटी, आइआइआइटी जोधपुर, एम्स, बिट्स पिलानी से एमओयू किया है। ग्रामीण युवाओं के साथ-साथ स्कूली बच्चों को स्टार्टअप्स का गुण विकसित करने के लिए स्कूली स्टार्टअप को शुरू किया गया है। सरकार ने आइस्टार्ट कार्यक्रम में स्कूली बच्चों को भी शामिल किया है। अब तक 1800 स्कूल व 30 हजार स्कूली बच्चे आइस्टार्ट पोर्टल पर अपना पंजीकरण करवा चुके हैं। पंजीकृत विद्यार्थियों को स्वरोजगार के बारे में जानकारी दी जाएगी।

### स्कूली बच्चों का बढ़ रहा जुड़ाव

- 30,345 बच्चे अब तक जुड़े
- 1,644 टीम बनी बच्चों की
- 404 बच्चियों के हाथ में लीड
- 1,814 इंस्टीट्यूट आए आगे
- 110 प्रोफेसर हैं इनमें

### अन्तरराष्ट्रीय पहचान के लिए चैलेंज

## ₹01 करोड़ तक सहयोग

- राज्य में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने और राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय पहचान के लिए मंच उपलब्ध कराया जा रहा है। **विशेषज्ञ कंपनियों के बीच समन्वय का काम कर रहे हैं।**
- चैलेंज फॉर चेंज कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित स्टार्टअप्स को **1 करोड़ रुपए तक का पुरस्कार, संसाधन व उपकरण की खरीद के लिए।**



जयपुर के झालाना संस्थानिक क्षेत्र के टेक्नोहब में प्रैक्टिस करते युवा।

### स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता

| वर्ष | राशि |
|---|---|
| 2017-18 | 0.92 |
| 2018-19 | 5.59 |
| 2019-20 | 0.33 |
| 2020-21 | 0 |
| 2021-22 | 9.51 |
| 2022-23 | 9.30 (अब तक) |

(राशि करोड़ में है)

### ये है उपलब्धि

**2019** की स्टार्टअप रैंकिंग जारी की गई, जिसमें **राजस्थान को उच्च स्तरीय राज्य की रैंकिंग प्रदान की गई थी।**

**2018** की राज्य स्टार्टअप रैंकिंग में **राजस्थान को टॉप परफॉर्मर चुना गया,** यह राज्य के लिए बड़ी उपलब्धि।

**236** करोड़ **का निवेश हुआ राजस्थान में अब तक** स्टार्टअप्स के क्षेत्र में।

**21980** रोजगार के अवसर मिले **स्टार्टअप्स के जरिए** राजस्थान में।

### पार्टनर भी बन रहे सारथी

- स्टार्टअप्स से जुड़े लोगों को आगे बढ़ाने के लिए 74 निवेशक साथ आए हैं। इनमें कुछ प्रमुख बैंक हैं, जो आर्थिक रूप से सहयोग कर रहे हैं। **ये पार्टनर स्टार्टअप्स और कंपनियों के बीच सेतु का काम कर रहे हैं।**
- प्रदेश के **प्रमुख 9 शिक्षण संस्थान भी स्टार्टअप अभियान से जुड़े** हैं, जो अपने संसाधन उपलब्ध करा रहे हैं।
- देश-विदेश से **12 गैर शैक्षणिक संगठन, कंपनियों का साथ मिला।** इसमें गूगल सहित अन्य बड़ी कंपनियां शामिल हैं।

### सीखने के लिए लगी होड़

युवाओं में सीखने की होड़ लग रही है। सेंटर्स में निर्धारित सीटों के मुकाबले ज्यादा लोग आवेदन कर रहे हैं।

### रोबोट भी कर रहे तैयार

सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग के अफसरों के निर्देशन में आर-कैट सेंटर में बनाया गया रोबोट

## जुड़ने, सीखने, फंडिंग के 3 चरण...

### 1 इस तरह से जुड़ सकते हैं

जयपुर में टेक्नोहब और अन्य शहरों में आइस्टार्ट सेंटर में युवा बिजनेस आइडिया के साथ आइ स्टार्ट नेक्स्ट की वेबसाइट पर आवेदन किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन की स्वीकृति के लिए सबसे पहले स्टार्टअप आइडिया देखा जाता है। निर्धारित चेकलिस्ट पर खरा उतरने पर स्टार्टअप को वहां जगह मिल जाती है। किसी भी उम्र या सेक्टर से सम्बद्ध व्यक्ति इसमें जुड़ सकता है। बेहतर और अलग आइडिया होने पर सरकार फंडिंग कर रही है।

निर्धारित चेकलिस्ट पर खरा उतरने पर मिल रहा स्थान।

### 2 सीखने के लिए प्रशिक्षक

युवाओं का मार्गदर्शन करने व सहयोग देने के लिए उद्यमिता से जुड़े कई लेक्चर कराए जा रहे हैं। अभी 50 सेक्टर में स्टार्टअप्स पर काम चल रहा है। इनमें एग्रीकल्चर, एजुकेशन, हेल्थकेयर, आइटी, फाइनेंस, टेक्स-टूरिज्म, फूड संबंधी स्टार्टअप्स मुख्य हैं। विज्ञापन, मार्केटिंग, एयरोनॉटिक्स, एनीमेशन, ऑटोमोबाइल, खेल, सोशल, टेलीकम्युनिकेशन, ट्रांसपोर्ट, केमिकल, कंस्ट्रक्शन, मेट्रोमोनियल, पैट्स एंड एनिमल व अन्य से भी युवा जुड़े हैं।

**25** सेक्टर में स्टार्टअप्स पर चल रहा काम

### 3 ...और फिर फंडिंग

स्टार्टअप्स को सरकार की ओर से ग्रांट और लोन दिया जा रहा है। ऐसे स्टार्टअप के चयन के लिए थाई पार्टी है। ऐसे चयनित स्टार्टअप को तीन अलग-अलग श्रेणी में रखा गया है, जिसमें गोल्ड, सिल्वर व ब्रॉन्ज शामिल हैं। इसी आधार पर फंडिंग ग्रांट तय होती है। 2 से 25 लाख रुपए तक की ग्रांट मिलती है। नीति के तहत सीड फंड के तहत 2 लाख रुपए तक, पायलट असिस्टेंस के लिए 10 लाख रुपए तक और टेक्नो फंड के तहत 25 लाख रुपए तक की वित्तीय सहायता दी जा रही है।

**02** स्टार्टअप्स के लिए तीन श्रेणी। तीनों श्रेणियों में अलग-अलग फंडिंग।

### आपके लिए स्टार्टअप सेंटर और सीट

**644** सीट हैं राज्य के आठ शहरों में संचालित स्टार्टअप सेंटर में





## यूनिकॉर्न बने राजस्थान के दो स्टार्टअप, जमाई धाक

राजस्थान से दो स्टार्टअप यूनिकॉर्न बन चुके हैं। इनमें पहला कार देखो व दूसरा डील शेयर का है। यूनिकॉर्न कंपनी बनने का मतलब, ऐसी कंपनी से है जिनकी बाजार में वेल्यूएशन करीब 8000 करोड़ रुपए (करीब एक बिलियन डॉलर) है।

### कार देखो

पुरानी और नई कारों को बेचने वाला प्लेटफार्म कार देखो स्टार्टअप से यूनिकॉर्न बन चुका है। वर्ष 2021 में कार देखो राजस्थान का पहला यूनिकॉर्न बना था। जयपुर के दो भाइयों (अनुराग व अमित जैन) ने वर्ष 2008 में कार देखो की शुरुआत की थी। शुरुआती दो वर्षों में इनकी वेबसाइट पर अच्छा ट्रैफिक आने लगा। धीरे-धीरे निवेशकों को भी लुभाने लगी। वर्ष 2021 में कम्पनी की वैल्यूएशन एक अरब डॉलर को पार कर गई।

### डील शेयर

डील शेयर यूनिकॉर्न बनने वाला राजस्थान का दूसरा स्टार्टअप है। यूनिकॉर्न की सूची में कंपनी का नाम इसी वर्ष जुड़ा है। डील शेयर की स्थापना 2018 में स्टार्टअप के तौर पर की गई थी। कंपनी टियर 2 और टियर 3 शहरों में ऑनलाइन किराना कॉमर्स बाजार उपलब्ध करवा रही है। ये बड़े की बजाए छोटे ब्रांडों से और सीधे फैक्ट्री से सौदे कर निम्न मध्यम वर्ग को ऑनलाइन कारोबार से जोड़ रहे हैं।

## पेश की नजीर — सरकार ने दिया चैलेंज, युवाओं ने स्वीकार किया और आसान कर दी राह

लोगों की जीवनशैली में सुधार, बीमारियों से लेकर आइटी संबंधी समस्याओं के समाधान और सरकारी कामकाज में सुधार के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग स्टार्टअप्स को चैलेंज दे रहा है। अब तक 34 चैलेंज दिए जा चुके हैं। दो चैलेंज में ही स्टार्टअप विजयी रहे हैं। इन दोनों स्टार्टअप्स के प्रोजेक्ट न केवल प्रदेश में अलग-अलग स्थानों पर लगे हुए हैं बल्कि लोगों के काम भी आ रहे हैं।

## नौकरी छोड़ स्टार्टअप शुरू: सचिवालय में लगाया विजिटर्स मैनेजमेंट सिस्टम

साल 2010 में मैट्रिक व एमबीए करने के बाद सॉफ्टवेयर कम्पनी में जॉब की। पांच साल तक जॉब के बाद अपना स्टार्टअप शुरू किया। अक्सर देखता था कि कई हाउसिंग सोसायटी में लोगों को प्रवेश के लिए लम्बी लाइन लगी रहती है। इस समस्या के समाधान के लिए सोचना शुरू किया। अपने साथियों से भी चर्चा की। इसके बाद डिजिटल सिस्टम तैयार किया। साल 2016 में विजिटर एंट्री के डिजिटल सिस्टम को लॉन्च किया। राजस्थान सरकार ने वर्ष 2020 में एक चैलेंज दिया, मैंने भी स्वीकार किया। सरकारी विभाग के लिए विजिटर मैनेजमेंट सिस्टम तैयार करना था। मैंने स्टार्टअप पेश किया और चैलेंज जीता।

अंकित तिवारी

### क्यूआर कोड स्कैन

विजिटर मैनेजमेंट का सिस्टम सचिवालय में लगाया है। इसके लिए सरकार ने 36 लाख का अनुदान भी दिया है। विजिटर मैनेजमेंट सिस्टम टेबलेट बेस चैक-इन सिस्टम है। इसमें विजिटर को अपनी डिटेल डालनी होती है। मोबाइल नंबर से ओटीपी से वेरीफाई करना होता है। क्यूआर कोड स्कैन करने से स्वतः डिटेल लेता है। इससे डिजिटली डेटा मिल जाता है जो हमारे क्लाउड पर सेव होता रहता है। डेटा की प्राइवेसी का विशेष ध्यान रखा गया है। यह बेहद सरल प्रक्रिया है। सरकार को आइडिया मिल गया। अब इसमें नवाचार होने चाहिए।

## चैलेंज फॉर चेंज स्वीकारा: जरूरतमंदों को उपलब्ध करवा रही एक रुपए में आरओ वाटर

15 साल तक नौकरी और बिजनेस करने के बाद भी मन में खुशी नहीं थी। जरूरतमंदों के लिए कुछ करना चाहती थी। इसी सोच के साथ छह साल पहले आरओ वाटर पर काम करना शुरू किया। जो लोग बाजार में 20 रुपए में पानी की बोतल खरीद कर नहीं पी सकते, उन्हें एक रुपए में एक बोतल पानी मिले, यही मेरा उद्देश्य था। इसी दिशा में काम करते हुए ऐसा आरओ तैयार किया, जिसमें पानी की बर्बादी केवल 25 फीसदी ही होती है। जबकि इससे पहले तक जो आरओ बाजार में थे, उनसे 50 फीसदी पानी बर्बाद होता था। इसी उद्देश्य के साथ काम शुरू किया। इसके लिए कई एक्सपर्ट्स से भी चर्चा की।

रोशनी टांक

### पानी की बर्बादी कम

आरओ में सात फिल्टर लगाए, उनसे 75 प्रतिशत पानी उपयोग में आने लगा। इसी कारण आरओ से एक रुपए में एक लीटर पानी मिलना संभव हो सका। वर्ष 2017 में डीओआइटी ने स्टार्टअप के लिए चैलेंज फॉर चेंज शुरू किया। मैंने इसे स्वीकार किया। एक रुपए में एक लीटर आरओ वाटर का कॉन्सेप्ट सरकार को पसंद आया। जयपुर के एसएमएस अस्पताल, बीकानेर व झालावाड़ के अस्पतालों में चार आरओ लगाए। मेंटीनेंस भी हम ही कर रहे हैं। आरओ में ठंडे और सामान्य पानी के दो विकल्प मौजूद हैं। 90-95 फीसदी लीटर पानी का उपयोग हो रहा है।